EDITOR'S SCATVIEW

Manoj Kumar Madhavan

India's broadcast and telecom sectors are undergoing seismic shifts, driven by policy, technology, and changing consumer behavior. This month, we spotlight the industry's efforts to localize and modernize—from the Telecom Regulatory Authority of India's push for indigenous broadcasting infrastructure to innovations shaping the future of satellite and streaming.

Despite the many challenges of 2024—ranging from audience fragmentation to cost rationalization—the Indian content industry held strong, with quality programming cutting through the noise. However, the strain is clearly being felt at the last mile, where local cable operators are struggling to retain relevance in a rapidly evolving landscape.

Meanwhile, India's telecom market, with a staggering 1.2 billion subscriptions, continues to serve as the digital backbone for both content and connectivity. In the public sector, DD Free Dish is set for a major transformation with TRAI's recommendations to make it more organized and addressable, signaling a big leap in accessibility and control.

This edition also explores the rise of generative AI in media, its impact on content creation, and the projected 30% surge in India's SVOD market by 2027, powered by OTT bundling. Notably, operators like GTPL Hathway are investing aggressively, underscoring the continued confidence in satellite-based delivery models—albeit in smarter, hybrid forms.

In our cover story, "Inverto's Bold Vision for the Future of Satellite and Streaming", we go behind the scenes with Subhasankar Mishra, Vice President – Business Development, South Asia at Inverto. For over 30 years, Inverto has been a leader in broadcast reception, and now it's charting a new course—shifting from hardware to solutions and services. With trailblazing offerings like Q-Stream™ and Q-Ads, Inverto is redefining what satellite can achieve in the age of streaming, especially across emerging markets like India and Southeast Asia.

As you flip through this issue, we hope to spark not just insights—but conversations about the next leap forward for broadcasting in India and beyond.

(Manoj Kumar Madhavan)

भारत के प्रसारण और दूरसंचार क्षेत्र नीति, प्रौद्योगिकी और बदलते उपभोक्ता व्यवहार के कारण बड़े पैमाने पर बदलाव से गुजर रहे हैं। इस महीने, हम स्थानीयकरण और आधुनिकीकरण के लिए उद्योगों के प्रयासों पर प्रकाश डालेंगे–जिसमें भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण द्वारा स्वदेशी प्रसारण बुनियादी ढ़ांचे के लिए जोर देने से लेकर सैटेलाइट और स्ट्रीमिंग के भविष्य को आकार देने वाले नवाचार तक शामिल है।

***2024** की कई चुनौतियों के बावजूद – दर्शकों के विखंडन से लेकर लागत युक्तिकरण तक – भारतीय सामग्री उद्योग मजबूत बना हुआ है जिसमें नोयाज को कम करने के लिए गुणवत्तापूर्ण प्रोग्रामिंग है। हालांकि तनाव स्पष्ट रूप से अंतिम मील पर महसूस किया जा रहा है, जहां स्थानीय केबल ऑपरेटर तेजी से विकसित हो रहे परिदृश्य में प्रासंगिकता बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।*

*इस बीच, भारत का दूरसंचार बाजार, जिसमें **1.2** बिलियन से अधिक ग्राहक हैं, कंटेंट और कनेक्टिविटी दोनों के लिए डिजिटल रीढ़ की हड्डी के रूप में काम करना जारी रखता है। सार्वजनिक क्षेत्र में, डीडी फ्री डिश ट्राई की सिफारिशों के साथ एक बड़े बदलाव के लिए तैयार है, ताकि इसे और अधिक संगठित और संबोधित किया जा सके, जो पहुंच और नियंत्रण में एक बड़ी छलांग का संकेत देता है।*

*इस संस्करण में मीडिया में जनरेटिव एआई के उदय, कंटेंट निर्माण पर इसके प्रभाव और ओटीटी बंडलिंग द्वारा संचालित **2027** तक भारत के एसवीओडी बाजार में अनुमानित **30%** उछाल का भी पता लगाया गया है। उल्लेखनीय रूप से जीटीपीएल हैथवे जैसे ऑपरेटर आक्रामक रूप से निवेश कर रहे हैं, जो सैटेलाइट आधारित डिलिवरी मॉडल में निरंतर विश्वास को रेखांकित करता है–हालांकि यह स्मार्ट, हाइब्रिड रूपों में।*

*हमारी कवर स्टोरी 'इनवर्टो बोल्ड विजन फॉर दॅ फ्यूचर ऑफ सैटेलाइट एंड स्ट्रीमिंग' में, हम इनवर्टो के साउथ एशिया में बिजनेस डेवलपमेंट के उपाध्यक्ष शुभशंकर मिश्रा के साथ पर्दे के पीछे की कहानी पर चर्चा करेंगे। **30** से अधिक वर्षों से इनवर्टो, ब्रॉडकास्ट रिसेप्शन में अग्रणी रहा है और अब यह एक नया रास्ता तैयार कर रहा है–हार्डवेयर से समाधान और सेवाओं की ओर बढ़ रहा है। Q-Stream™ और Q-Ads जैसी बेहतरीन पेशकशों के साथ इनवर्टो स्ट्रीमिंग के युग में सैटेलाइट क्या हासिल कर सकता है, इसे फिर से परिभाषित कर रहा है, खासकर भारत और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे उभरते बाजारों में।*

जैसाकि आप इस अंक को पढ़ रहे हैं, हम न केवल अंतर्दृष्टि जगाने की उम्मीद करते हैं बल्कि भारत और उससे आगे के क्षेत्रों में प्रसारण के लिए अगली छलांग के बारे में भी बातचीत करते है।

(Manoj Kumar Madhavan)